सेर्गेय बारूजदीन

एल्योश्का

पानी की बाल्टी

और एक कील

Детгиз - 1960

पानी की बाल्टी

ऐसा कई बार पहले भी हुआ था. माँ एल्योश्का से कुछ माँगती - जाओ बगल के कमरे से नमकदानी ले आओ या ग्लास में पानी डाल दो. पर एल्योश्का ऐसा दिखावा करता जैसे उसने माँ की बात सुनी ही न हो और वो अपना खेल जारी रखता. फिर माँ खुद उठकर नमक लाती, स्वयं पानी डालती, और बस!

फिर एक दिन एलोश्का टहलने गया. जैसे ही वह गेट से बाहर निकला, किस्मत ने उसका साथ दिया. फुटपाथ के ठीक बगल में एक विशाल डम्पर ट्रक खड़ा था. ड्राइवर ने उसका बोनट खोल दिया था और वो इंजन की मरम्मत कर रहा था.

कौन सा पांच साल का लड़का एक बड़े डंपर ट्रक को एक बार फिर से देखने का मौका छोड़ेगा!

और एलोश्का ने निश्चित रूप से यह मौका नहीं गंवाया. वह रुका और वहीं पर मुंह बाए खड़ा रहा. उसने बोनट के हुड पर एक चमकदार धातु का भालू देखा (यह भालू यारोस्लाव ट्रकों का प्रतीक था).

उसने ड्राइवर के केबिन में स्टीयरिंग व्हील देखा और ट्रक के रबर टायर को भी छुआ, जो खुद एलोश्का से भी ऊंचा था...

अंत में इंजन ठीक करने के बाद ड्राइवर ने हुड को जोर से बंद कर दिया.

"क्या अब ट्रक चलेगा?" एल्योश्का ने पूछा.

"नहीं, जब तक हम इसमें पानी नहीं भरेंगे, तब तक ट्रक स्टार्ट नहीं होगा," ड्राइवर ने हाथ पोंछते हुए कहा. "वैसे, तुम कहाँ रहते हो? कहीं दूर या पास में?"

"पास में," एल्योश्का ने उत्तर दिया. "एकदम पास में."

"अच्छी बात है!" ड्राइवर ने कहा. "तो मैं तुमसे थोड़ा पानी उधार लूंगा. तुम्हें कोई ऐतराज़ तो नहीं?"

"बिल्कुल नहीं!" एल्योश्का ने कहा.

ड्राइवर ने केबिन से एक खाली बाल्टी निकाली और फिर वो दोनों एल्योश्का के घर गए.

"माँ, मेरे साथ यह ड्राइवर अंकल आए हैं. उन्हें कुछ पानी चाहिए," एलोश्का ने अपनी माँ को समझाया.

"कृपया अन्दर आइए," माँ ने कहा और वो ड्राइवर को रसोईघर में ले गयीं.

ड्राइवर ने अपनी बड़ी बाल्टी पानी से भरी. एल्योश्का तुरन्त अपनी छोटी बाल्टी लेकर आया और उसने भी अपनी बाल्टी भरी.

फिर वे ट्रक पर वापस लौटे.

ड्राइवर ने अपनी बाल्टी से रेडिएटर में पानी भरा.

"और मेरी बाल्टी?" एल्योश्का ने पूछा.

"हाँ, तुम्हारी भी!" ड्राइवर ने कहा. फिर उसने एल्योश्का की बाल्टी ली और उसका पानी भी रेडिएटर में डाल दिया. "अब सब ठीक हो गया है. तुम्हारी मदद के लिए बहुत धन्यवाद! चलता हूं, बाद में फिर कभी मिलेंगे!"

ट्रक भालू की तरह दहाड़ा, कांपा और फिर वहाँ से चला गया.

एल्योश्का अपनी खाली बाल्टी लिए काफी देर तक गायब होते ट्रक को टकटकी लगाए देखता रहा.

फिर घर लौटकर उसने सारी बात अपनी माँ को बताई.

"माँ! आज से मैं आपकी मदद करना चाहता हूँ!"

माँ को बहुत ताज्जुब हुआ.

"लगता है तुम बदल गए हो? मेरा बेटा तो ऐसा नहीं था!"

"माँ, मैं कुछ भी नहीं बदला हूं, मैं वैसा ही हूँ!" एल्योश्का ने माँ को आश्वस्त किया. “बस मैं आपकी मदद करना चाहता हूँ!”
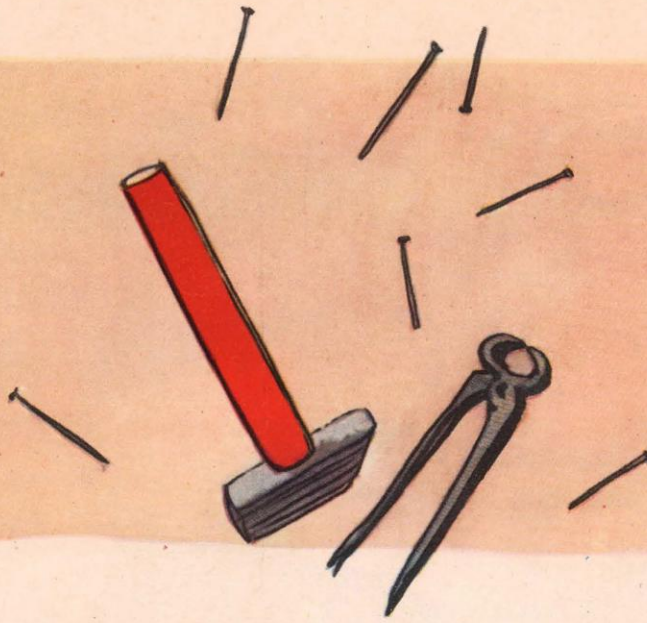
एक सही कील

सुबह जब पिताजी काम पर जाने के लिए तैयार हो रहे थे, तब एलोश्का की माँ ने उनसे कहा.

"आज रात आप रसोई में कीलें जरूर ठोक दें. मुझे कपड़े सुखाने के लिए रस्सी बांधनी है."

पिता ने वादा किया और फिर वो काम पर चले गये.

कुछ देर बाद माँ किराने का सामान खरीदने के लिए दुकान पर जाने के लिए तैयार हुई.

"तुम अभी खेलो, बेटा," उन्होंने एलोश्का से कहा, "मैं जल्दी ही वापस आ जाऊँगी."

"मैं खेलूँगा," एलोश्का ने वादा किया. लेकिन जैसे ही उसकी माँ गईं वह रसोईघर में भागकर गया.

उसने एक हथौड़ा उठाया और कीलें लीं और उन्हें एक-एक करके दीवार में ठोकना शुरू किया.

उसने दीवार में कम-से-कम दस कीलें ठोंकीं!

"अभी के लिए इतना ही काफी है," एल्योश्का ने सोचा.

तभी माँ दुकान से वापिस लौटीं.

रसोईघर में घुसते ही माँ ने आश्चर्य से पूछा. "दीवार में इतनी सारी कीलें किसने ठोंकी हैं?"

"मैंने," एल्योश्का ने गर्व से कहा. "अब हमें कीलें ठोकने के लिए पिताजी का इंतजार नहीं करना पड़ेगा."

माँ एलोश्का को उदास नहीं करना चाहती थी.

"चलो हम इस काम को अलग तरीके से करेंगे," माँ ने सुझाव दिया. "हम इन कीलों को उखाड़ देंगे क्योंकि हमें इनकी जरूरत नहीं है. लेकिन तुम अभी यहाँ ऊपर, एक कील ठोक दो. मुझे वहाँ एक बड़ी कील की सख्त जरूरत है. ठीक है?"

"ठीक है!" एल्योश्का ने अपनी सहमति ज़ाहिर की.

माँ ने प्लास से दीवार पर लगी दस कीलें उखाड़ दीं. फिर उसने एलोश्का को एक कुर्सी दी. एल्योश्का कुर्सी पर चढ़ गया और उसने दीवार में ऊपर एक बड़ी कील ठोक दी.

"यह कील सबसे ज़रूरी है," माँ ने कहा और उन्होंने तुरंत उसपर भगोने को लटका दिया.

अब, जब भी एलोश्का रसोईघर में प्रवेश करता है, तो वह सबसे पहले दीवार की ओर देखता है: क्या भगोना अभी भी लटका हुआ है?

हां, वो लटका हुआ है!

तो, यह सच है कि एल्योश्का ने दीवार में सबसे ज़रूरी कील ठोकी थी.

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

Sergey Baruzdin

Alyoshka, Bucket of water and Nail
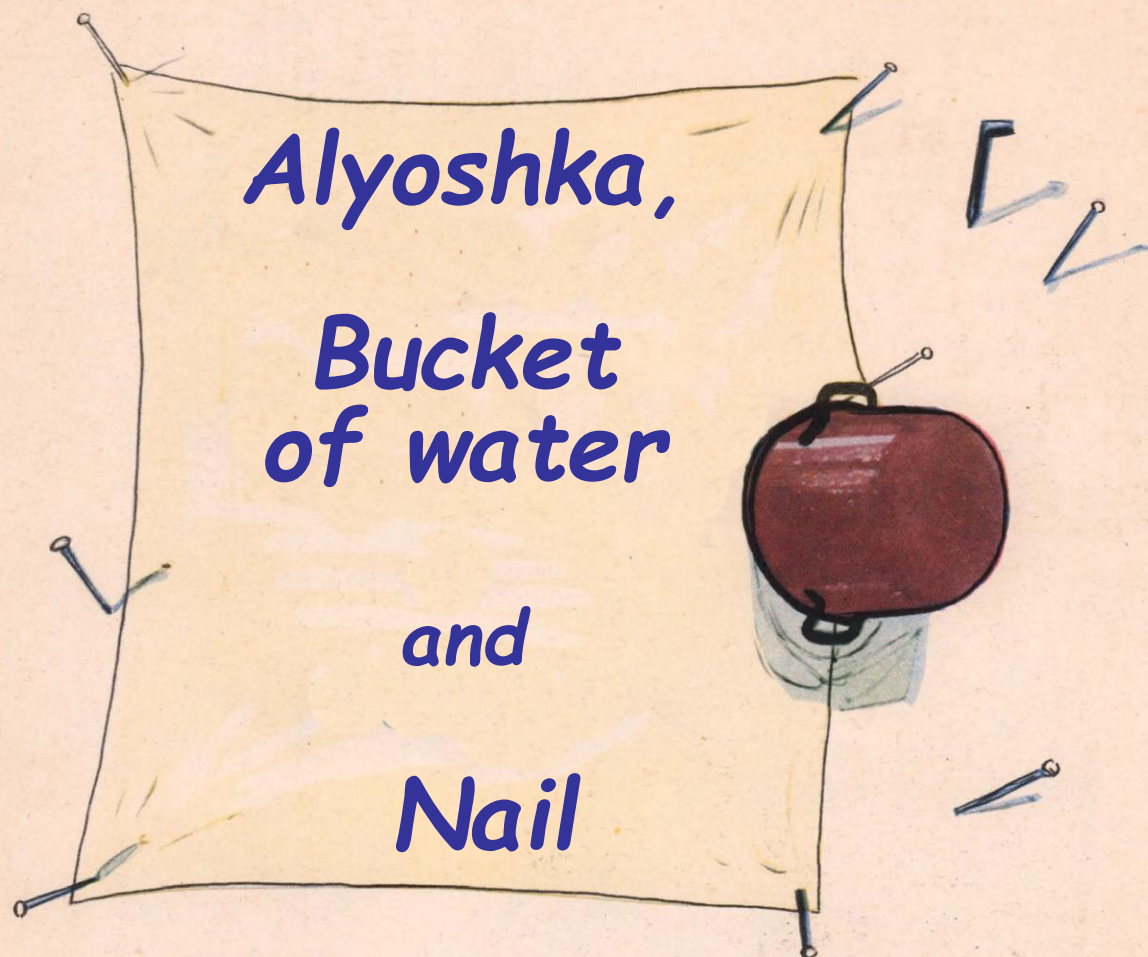
Illustrations by Fyodor Lemkul

Sergey Baruzdin

Illustrations by Fyodor Lemkul

Translation into Hindi by Arvind Gupta

Alyoshka
Bucket of water
and Nail

Translation into English by Evgeny Spirin
Edited by Arvind Gupta
Layout by Evgeny Spirin

International project:
“Mini Progress and Mini Raduga”